हरियाणा :

सिरसा में, फसल 65 से 80 दिनों पुरानी है जो वनस्पतिक अवस्था से प्रजनन अवस्था में प्रवेश कर रही है। फसल की स्थिति अच्छी है। किसानों के खेतों के आस-पास के क्षेत्रों में सफ़ेद मक्खी की आबादी सीमा 2.7-32.9 / 3 पत्तियाँ और थ्रिप्स 10.9-104.7 / 3 पत्तियाँ के बीच थी।

हिसार में, फसल 71 से 91 दिनों पुरानी है जो वनस्पतिक अवस्था से फूलों की अवस्था में है। मौसम में धूलभरे कुहरे के साथ आंशिक रूप से बादल छाए हुए थे। खेतों में उर्वरक की दूसरी दी है| निराई तथा गुड़ाई कार्य भी पूरा हो चुका है| किसानों के खेतों में, सफेद मक्खी, तेला(लीफ होप्पर) और थ्रिप्स की आबादी संख्या 2.3 से 28.6, 0.7 से 12.2 और 13.2 से 35.8 प्रति 3 पत्तियाँ क्रमानुसार है। अगेती बोई गई कपास में सफ़ेद मक्खी तथा देर से बोई गई कपास में तेला (लीफ होप्पर) की संख्या उत्पन्न हो रही है| जिन क्षेत्रों में वर्षा नहीं हो रही है वहाँ थ्रिप्स की आबादी बढ़ रही है। कुछ पौधों में मिलीबग (फेनोकोकस सोलनोप्सिस) का संक्रमण देखा गया है। **जड़ गलन** का विस्तार देखा गया है| कपास के कई खेतों में **पत्ती मोडक विषाणु रोग** देखा गया है **|**

सलाह :

तीनों रसचूषक कीटों का विस्तार हो रहा हैं। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे नियमित फसल की निगरानी करते रहें, अंत:सस्य क्रियाएँ (इंटर कल्चरल ऑपरेशन) करें और सफ़ेद मक्खी के शुरुआती संक्रमण का पता लगाने के लिए पीले चिपचिपे ट्रैप को स्थापित करें। यदि किसी रसचूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर (ईटीएल) को पार कर जाती है, तो 200 लीटर पानी में नीम आधारित कीटनाशक @ 1.0 लीटर/एकड़ का प्रयोग करें। यदि सफ़ेद मक्खी तथा थ्रिप्स का मिश्रित संक्रमण होता है, तो डायफ़ेन्थियुरॉन 50 डब्ल्यूपी @ 200 ग्राम/एकड़ तथा फ्लोनिकेमिड 50 डब्ल्यूजी @ 60ग्राम/एकड़ का प्रयोग करें। जड़ गलन की अवस्था में, स्पॉट ड्रेंचिंग कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी @ 25 ग्राम/10 लीटर पानी में प्रयोग करें। सफ़ेद मक्खी का समय पर प्रबंधन करने से कपास में **पत्ती मोडक विषाणु रोग** के विस्तार को कम करने में मदद करेगा|

राजस्थान :

बांसवाड़ा में, फसल 14 दिन पुरानी है और वास्तविक पत्ती की अवस्था में है । तेज हवा के साथ मौसम साफ था। अंत:सस्य क्रियाएँ (इंटर कल्चरल ऑपरेशन) हो चुकी है। खेत खरपतवारमुक्त हैं। फसल कीट के संक्रमण से मुक्त है। फसल में रोगों का कोई विस्तार नहीं देखा गया है|

श्रीगंगानगर में, फसल 55 से 85 दिनों की वनस्पतिक अवस्था में है। फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई, निंदाई एवं खरपतवार का नियंत्रण एवं उर्वरक की पहली खुराक (यूरिया) पौधों को दिया जा चुका है| | इटसीट (ट्रायंथेमा एसपीपी), तंदला (डिगेरा आरवेन्सिस) पतंगा (साइपरस रोटंडस) जैसे खरपतवारों ने फसल को प्रभावित किया है| तेला (जेसिड) का संक्रमण(3.17-9.33/3 पत्तियाँ) तथा सफ़ेद मक्खी का संक्रमण आर्थिक हानि स्तर (ईटीएल) (0.67-1.33/3 पत्तियाँ) से नीचे देखा गया है| थ्रिप्स की संख्या सीमा 15.67-19.33 प्रति 3 पत्तियाँ दर्ज की गई है| किसानों के खेतों में पत्ती मोड़क विषाणु रोग (CLCuD PDI 10-15%) भी देखा गया है।

सलाह :

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसल की नियमित रूप निगरानी करें तथा रसचूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर (ईटीएल) से ऊपर पाई जाने पर कीटनाशक का छिड़काव करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे रसचूषक कीटों(सफ़ेद मक्खी, तेला, थ्रिप्स) तथा धब्बेदार सूँडी पर नीम आधारित कीटनाशक @ 5 मिली / लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। जब कभी सफ़ेद मक्खी, तेला थ्रिप्स की संख्या आर्थिक हानि स्तर (ईटीएल) को पार कर जाती है तभी फ्लोनिकेमिड 50 डब्ल्यूजी @ 0.3ग्रा या थियामेथोक्साम 25 डब्ल्यूजी @ 0.5 ग्राम या इथियान 50 ईसी @ 3.0 मिली प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें। सफ़ेद मक्खी का समय पर प्रबंधन करने से कपास में **पत्ती मोडक विषाणु रोग** के विस्तार को कम करने में मदद करेगा|

मध्य प्रदेश :

खंडवा जिले में फसल 16 से 60 दिनों की वनस्पति अवस्था में है। फसल में अंत-सस्य क्रियाएँ (इंटर कल्चरल ऑपरेशन), फसल की बुवाई, गैप फिलिंग, कीटनाशकों का अनुप्रयोग तथा उर्वरक डालने का कार्य पूरा हो चुका है। ईकाइनोचोला, कॉमलीना, सायीनोडन डैक्टिलोन और पार्थेनियम, साइपरस रोटंडस, चेनोपोडियम एल्बम और अमारैंथस विरिडिस जैसे खरपतवारों से खेत प्रभावित है। तेला (जेसिड) का संक्रमण प्रारंभिक अवस्था में है। अभी तक फसल में कोई रोग नहीं देखा गया है|

सलाह :

किसानों को सलाह दी जाती है की वे बुवाई का कार्य एक सप्ताह के भीतर पूरा कर ले। खरपतवार नियंत्रण तथा अंत-सस्य क्रियाएँ (इंटर कल्चरल ऑपरेशन) सप्ताह के अंदर पूरा कर लें| कोलपा, अंकुरण के 3-4 दिनों के बाद पूरा किया जा सकता है, अंकुरण के एक सप्ताह के भीतर थीनिंग को पूरा किया जा सकता है। उर्वरक का अनुप्रयोग 150:75:40 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से करें| जिन क्षेत्रों में तेला की संख्या आर्थिक हानि स्तर(ईटीएल) को पार करती है, वहाँ इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल @ 3 मिली या थायमेथोक्साम 25 डब्ल्यूजी @ 2.5 ग्राम या एसिटामिप्रिड 20 एसपी @ 3 ग्राम / 10 लीटर पानी से साथ छिड़काव करना चाहिए।

नोट : यह अनुवाद गूगल की मदद से किया गया है चुकी अनुवाद कार्य में प्रविणता हासिल नहीं है| अत: उपरोक्त अनुवाद कार्य विशेषज्ञ से जांच ले|